चौ० रणबीर सिंह जी की
पावन कथा

✻ ओ३म् ✻

देशभक्त एवं महान् स्वतंत्रता-सेनानी
चौधरी रणबीर सिंह जी की
पावन-कथा

✻

लेखक :

सुरेन्द्र कुमार 'सरस'

2261/9, सूर्यनगर, नजदीक टेलीफोन एक्सचेंज
गोहाना रोड, रोहतक सम्पर्क 9254069111

✻

प्रकाशक :
चौधरी रणबीर सिंह पीठ
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

मानवता के परम आदर्श, अछूतोद्धारक
चौ० रणबीरसिंह जी के पूज्य पिता
चौ० मातूराम जी आर्य को
शत-शत नमन....

वन्दना

टेक—वेदों के सत्य मार्ग पर, चलकर दिखा दिया।
भटके हुए जो लोग थे, उनको बुला लिया॥
वेदों के सत्य मार्ग पर.... ॥

1. जो भी दुःखी गरीब थे, उन के करीब थे।
दीनों के थे मसीहा, जो निर्धन गरीब थे।
इनके समीप आए जो, मंजिल दिखा दिया।
वेदों के सत्य मार्ग पर.... ॥

2. उस दिल में देशभक्ति का, जज्बा अजीब था।
हर दूर लक्ष्य भी सदा, उनके करीब था।
वैदिक धर्म श्रेष्ठ है, सब को बता दिया।
वेदों के सत्य मार्ग पर.... ॥

3. ठोकर लगी तो गिर पड़े, आए थे इनके पास।
सारे जहां में घूमकर, हो करके फिर निराश।
बढ़कर के हाथ पकड़ा और गले लगा लिया।
वेदों के सत्य मार्ग पर.... ॥

4. चलते रहो '**सरस**' सदा, इनके ही मार्ग पर।
करते रहो भजन सदा, ईश्वर के नाम पर।
पतित-पावन वेद की, ज्योति जला दिया।
वेदों के सत्य मार्ग पर.... ॥

सन्देश

मुझे प्रसन्नता है कि श्री सुरेन्द्र कुमार 'सरस' ने साहित्य की अपनी विद्या के जरिये स्वतंत्रता संग्राम के अनुपम योद्धा एवं सजग कर्मवीर चौधरी रणबीर सिंह की संक्षिप्त जीवन गाथा को सरल तथा सरस ढ़ंग से प्रस्तुत किया है। मैं आभारी हूँ।

संतोष है कि विश्वविद्यालय में कार्यरत चौधरी रणबीर सिंह पीठ ने इसके प्रकशन-प्रसारण का निर्णय लेकर जनचेतना के काम को आगे बढाया।

शुभ कामना के साथ,

-आर.पी.हुड्डा

सन्देश

प्रसन्नता है कि पण्डित सुरेन्द्र कुमार ‘सरस’ जी ने महान स्वतंत्रता सेनानी चौधरी रणबीर सिंह के जीवन को ‘‘पावन कथा’’ के रूप में सरस प्रस्तुत किया है।

चौधरी रणबीर सिंह का जीवन अनुकरणीय है। उनके सामने पहले देश की स्वतंत्रता प्राप्ति का लक्ष्य था, फिर सामाजिक समरसता के साथ विकास का ध्येय रहा। संविधान सभा में भी उन्होंने जन-जीवन से जुड़े प्रश्नों को सशक्त उकेरा।

इस कृति को प्रकाशित करने में शोध पीठ को प्रसन्नता है। इससे चौधरी साहिब के व्यक्तित्व को जानने/समझने में लोकसाहित्य की इस सरस विधा के जरिये सहायता मिलेगी।

शोध केन्द्र

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक।

रोहतक : 30-090-2011

राष्ट्रीय तथा राज्यस्तरीय अनेक पुरस्कारों से अलंकृत हरियाणा के जाने माने कवि श्री भारतभूषण सांघीवाल का

शुभ सन्देश

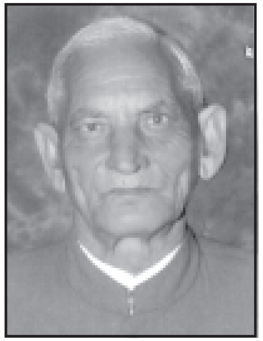

पण्डित सुरेन्द्र कुमार 'सरस' एक अनुभवी एवं विचारशील कवि हैं। इन्होंने पुस्तक लिखने से पूर्व ही मुझसे प्रश्न किया था कि पण्डित जी ! यदि मैं देशभक्त एवं महान् स्वतन्त्रता सेनानी **'चौ० रणबीर सिंह जी की पावन-कथा'** के संदर्भ में कुछ लिखूँ, तो कैसा रहेगा? इन्होंने उनके जीवन से अवगत कराते हुए कहा कि चौधरी साहब ने समाजसेवा, भारतीय संविधान निर्माण सभा में योगदान एवं स्वतन्त्रता आन्दोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। फलतः इन्होंने सीडी के रूप में संक्षिप्त करके बहुत ही सरल एवं सुन्दर बना दिया। इनके जीवनचरित से जनताजनार्दन को त्याग, तपस्या एवं बलिदान की प्रेरणा मिलेगी।

पण्डित सुरेन्द्र कुमार जी काफी समय से आर्यसमाज के प्रति समर्पित हैं। आर्यसमाज के मासिक सत्संग एवं आर्यसमाज के विशेष आयोजनों में अपनी रचित रचना श्रोताओं को सुनाकर भावविभोर बना देते हैं। जैसा कि इन्होंने अपना नाम 'सरस' रखा है, वैसे ही इनकी रचना भी 'सरस' है। इनका उद्देश्य समाजसुधार तथा मनुष्य-जन्म का वास्तविक कर्त्तव्य की ओर संकेत करना है, जिससे मनुष्य-जन्म सार्थक होसके। इनके आध्यात्मिक भजनों से इसकी पुष्टि होती है।

मुझे प्रसन्नता है कि 'सरस' जी की इसी प्रकार समाज और वैदिक धर्म के प्रति सेवा करते रहेंगे। मेरा आशीर्वाद इनके साथ है। इनकी यह रचना समाजहित में प्रेरणास्रोत सिद्ध होगी।

–भारत भूषण सांघीवाल

शुभ सन्देश

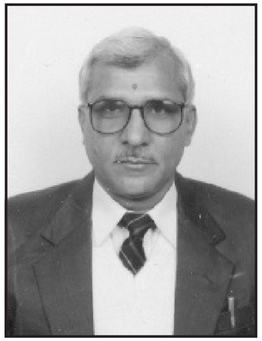

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि पण्डित सुरेन्द्र कुमार 'सरस' ने देशभक्त एवं महान् स्वतन्त्रता सेनानी **'चौ० रणबीर सिंह जी की पावन-कथा'** पुस्तक काव्यरूप में तैयार की। प्रस्तुत काव्य में चौधरी साहब द्वारा समाजसेवा एवं देशसेवा के लिए किये गए कार्यों का संक्षिप्त रूप में वर्णन किया गया है, जो समाज एवं देशप्रेम के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। चौधरी साहब के समय में देश की स्थिति काफी दयनीय थी, जिसे चौधरी साहब ने योगदान देकर बखूबी निभाया।

सुरेन्द्र कुमार जी काफी समय से आर्यसमाज के विभिन्न उत्सवों एवं मासिक सत्संगों में अपनी रचित रचना का पाठ किया करते हैं। इनकी लेखन-कला के साथ-साथ भजन गाने में भी विशेष रुचि है। प्रभुभक्ति एवं समाज की समस्याओं पर आधारित गीत अक्सर गाया करते हैं, जिसे समाज काफी पसन्द करता है।

सुरेन्द्र कुमार 'सरस' अत्यन्त अल्प साधन एवं अपने व्यस्त जीवन के होते हुए भी इस सुन्दर रचना के लिए बधाई के पात्र हैं। इन्होंने बहुत ही महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।

मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक आने वाली पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत साबित होगी तथा देश और धर्म के प्रति कार्य करने की भावना भी जागृत होगी।

डॉ० बलदेव सिंह मेहरा
प्रोफेसर, अध्यक्ष,
पालि एवं प्राकृत संस्कृत विभाग,
म०द०वि०वि०, रोहतक

दो शब्द

अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण! रोचते।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी॥

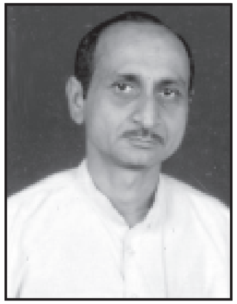

मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम लक्ष्मण जी से कहते हैं–हे लक्ष्मण! यद्यपि स्वर्णमयी लंका बहुत ही सुन्दर है, अपितु जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है। महान् है, वन्दनीय है, सर्वोपरि है।

परमपिता परमात्मा की महती कृपा से प्रस्तुत काव्य देशभक्त एवं महान् स्वतन्त्रता-सेनानी **'चौ० रणबीर सिंह जी की पावन-कथा'** लिखने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। सर्वप्रथम चौधरी साहब द्वारा लिखित **'स्वराज के स्वर'** पुस्तक को पढ़कर तथा इनके जीवन से सम्बन्धित पुस्तक क्रमशः माननीय प्रतापसिंह जी पत्रकार, गंगवा रोड (हिसार), आचार्य धर्मवीर कुण्डू, टिटौली (रोहतक) और महेन्द्र शास्त्री, न्यात (सोनीपत) द्वारा लिखित पुस्तक पढ़कर मैंने इस बारे में लिखने का मन बनाया।

चौधरी साहब के जन्म से आगे तक जितनी भी जानकारी प्राप्त हुई, उससे अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह मिली कि जहाँ पूर्व से ही पवित्र संस्कारित परिवार और इस परिवार में देश और धर्म के ऊपर पूरी आस्था देखने को मिली। वहीं चौ० रणबीर सिंह जी की समाज की सेवा, भारतीय संविधान सभा में योगदान और स्वतन्त्रता आन्दोलन के प्रति तड़प देखकर मन प्रफुल्लित हो उठा।

महान् आत्मा चौ० मातूराम जी के बारे पढ़कर तो मन अत्यन्त रोमाञ्चित हो उठा। उनके त्याग के बारे में जन-जन को ज्ञात है कि बड़े उदार दिल के थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती के परम भक्त थे। उन्होंने मानवता का पूरा पाठ पढ़ाया तथा हरदम जनसेवा में ही तैयार रहते थे। यहाँ तक कि पूज्य पिता चौ० बख्तावर सिंह जी को सिपाहियों द्वारा दुर्घटना होने पर भी किसी को कुछ नहीं कहा, बल्कि समझाया कि यह तो अनहोनी है, किसी के साथ भी हो सकती है। ऐसे महापुरुष के बारे में लिखकर तो जीवन ही धन्य हो जायेगा।

सर्वप्रथम परमपिता परमात्मा से आशीर्वाद प्राप्त कर माता-पिता तथा जन्मभूमि भारत, भारत में प्रान्त हरयाणा और हरयाणा में भी रोहतक और रोहतक में पवित्र गाँव सांघी, जिस गाँव ने ऐसे महापुरुष को जन्म दिया, जो समाजसेवा और देशहित के लिए समर्पित हो गये। वैसे तो हरियाणा की पृष्ठभूमि बहुत ही ऊँची है। यहाँ के अनेक वीरों ने अपनी शहादत देकर देश को आजाद कराने में पूरी शक्ति लगाई है, जिनका नाम आज भी इतिहास में अमर है।

उसी तरह से चौधरी साहब के जीवनकाल में देश की आजादी ही भारतवासियों के सामने प्रमुख समस्या थी, जिसे चौधरी साहब ने बखूबी निभाया। तब समाज में सहृदयतापूर्ण व्यवहार था। सभी आपस में एक-दूसरे के साथ मरमिटने के लिए सदा तैयार रहते थे। बड़ा ही अद्भुत दृश्य था। चौधरी साहब ने कभी हार नहीं मानी, बल्कि जो लोग इस मार्ग से घबराते थे, उन्हें भी समझाते ही रहते थे। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के पदचिह्नों पर चलते हुए देश की आजादी में पूरा योगदान दिया। वहीं भारतीय संविधान सभा के निर्माण में अनुपम भूमिका भी निभाई। साथ ही राजनीति से वैराग्य होने की बात प्रकट की। जो लोग इनके साथ रहते थे, उन्हें यह आशा थी कि चौधरी साहब के साथ मिलकर काम करेंगे।

मैंने इस तरह की अनेक घटनाओं का वर्णन अपनी अल्पबुद्धि से बहुत ही सरल एवं सरस बनाने का प्रयास किया है, वैसे तो ऐसे महापुरुष के बारे में लिखना मेरे जैसे अल्पज्ञ के वश की बात नहीं, परन्तु इनके जीवन से कुछ पुष्प चुनकर अपने काव्य में लिया है। चौधरी साहब तो अपार सागर हैं, इनके जीवन पर जितना लिखा जाये, कम है। हमने तो सागर से थोड़ा-सा जल लिया है, जिससे आने वाली पीढ़ी के मार्गदर्शन में कुछ सहयोग कर सकूँ।

चाहता तो यह था कि इसकी सीडी बनवाकर जनता के सामने पेश करूँ, किन्तु ऐसा न कर सका। परमपिता परमात्मा अपने पूर्वकृत कर्मों के हिसाब से सबको न्याय देता है। बचपन में माता-पिता के स्वर्गवास हो जाने के कारण न ही मैं ठीक से पढ़ सका और न ही

कोई अच्छा रोजगार पा सका। मेरे पूज्य पिताजी कवि थे, उन्होंने अनेक ग्रन्थों की रचनाएं कीं, मैं बचपन में जो कुछ उनसे सीखा, उसे लिखने का प्रयास किया है। आचार्य प्रिंटिंग प्रेस (दयानन्दमठ) गोहाना रोड, रोहतक में लगभग 23 वर्ष तक कार्य किया। तत्पश्चात् पूज्य आचार्य बलदेव जी एवं आचार्य विजयपाल जी गुरुकुल झज्जर के शुभाशीर्वाद से आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक में लिपिक कम कम्प्यूटर ऑपरेटर के पद पर कार्यरत हूं। कम्प्यूटर पर संस्कृत एवं हिन्दी का कार्य करता हूँ और इससे जो आमदनी होती है, उसी से परिवार का पालन-पोषण करता हूँ। आर्यसमाज से लगाव होने के कारण समय-समय पर ईश्वरभक्ति के भजनों का निर्माण तथा गायन करता रहता हूँ।

इस काव्य को लिखने की प्रेरणा हमारे जिन विद्वानों ने दी है, मैं उनका हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिनमें सर्वप्रथम पितृतुल्य राष्ट्रीय तथा राज्यस्तरीय अनेक पुरस्कारों से अलंकृत हरयाणा के जाने-माने लोकप्रिय कवि श्री भारतभूषण सांघीवाल, सरस्वती सदन, जनता कालोनी (रोहतक), आदरणीय डॉ० बलदेव सिंह मेहरा, प्रोफेसर एम.डी.यू., (रोहतक), डॉ० सुरेन्द्रकुमार प्रोफेसर, एम.डी.यू. (रोहतक), श्री चन्द्रभान सैनी, कृपालनगर (रोहतक), पं० सुखदेव शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ (रोहतक), श्री शेरसिंह जी सभा कार्यालयाधीक्षक, श्री सत्यवान आर्य सभा वरिष्ठ लिपिक, श्री ओमप्रकाश जी शास्त्री सभा गणक, प्रो० हरिसिंह खेड़ीजट (झज्जर), धर्मवीर कुण्डू, टिटौली (रोहतक), श्री महेन्द्र शास्त्री, न्यात (सोनीपत), ब्रह्मचारी जगदीप आर्य, बालन्द (रोहतक) तथा साथ ही हमारे अनेक नौजवान साथी एवं नगर के अनेक प्रेमी लोग हैं। इन सभी महानुभावों का हृदय से आभारी हूं।

आशा करता हूं कि **'चौ० रणबीर सिंह जी की पावन-कथा'** को पढ़कर जनता-जनार्दन में देशप्रेम व समाजसुधार की भावना प्रबल होगी। अन्त में सभी विद्वान् महापुरुषों का हृदय से आदर करता हूँ। आशा करता हूँ कि भविष्य में भी सभी विद्वान् एवं सहयोगी इसी तरह से हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे। **–सुरेन्द्र कुमार 'सरस'**

*** ओ३म् ***

देशभक्त एवं महान् स्वतंत्रता-सेनानी
चौधरी रणबीरसिंह जी की
पावन-कथा

टेक-हरयाणा की पुण्यभूमि को, सादर शीश झुकाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की, पावन कथा सुनाते हैं॥
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

1. सर्वप्रथम मैं परमपिता को, सादर शीश झुकाता हूँ।
माता-पिता की उत्तम शिक्षा, जीवन में अपनाता हूँ।
पूज्य गुरु के श्रीचरणों में, अपना हृदय लुटाता हूँ।
आर्यपुत्र की पावन महिमा, सबको 'सरस' सुनाता हूँ।
पुण्यभूमि को शीश झुकाकर, इनकी गाथा गाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

2. परमेश्वर ने मानव जीवन कितना मधुर बनाया है।
मानव को फिर श्रेष्ठ बनाकर, मानव मन हरषाया है।
शुभ आचरण करेगा प्राणी, वेदों में समझाया है।
माता-पिता की सेवा करना, उत्तम धर्म बताया है।
जग में उत्तम बनते हैं और जीवन धन्य बनाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

3. भारत देश हमारा प्यारा, सब देशों में न्यारा है।
वैदिकधर्म की उत्तम ध्वनि है, अद्‌भुत शान हमारा है।
हरियाली है चहुंदिशा में, सूरज-चाँद-सितारा है।
ऋषियों की पावन धरती पर, मानवता का नारा है।
तीन रंगों के पावन झण्डे, जगह-जगह लहराते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।
4. स्वर्ग समान हमारा भारत, यहाँ अनेक ऋषि आए।
वेद-ज्ञान की बहा दी गंगा, जग में उत्तम कहलाए।
सुरसरि धार बहे नित कलकल, हरे-भरे वन हरषाए।
सोने की चिड़िया है भारत, वीरों ने जौहर दिखलाए।
सरदार भगतसिंह जैसे योद्धा, फाँसी पर चढ़ जाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।
5. हरियाणा इक प्रान्त मनोहर, इसकी कथा पुरानी है।
ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है, इसकी अमिट कहानी है।
रोहतक शहर बहुत ही सुन्दर, मीठा-मीठा पानी है।
दूध-दही घी हरयाणा की, अमृत-सरस निशानी है।
ऐतिहासिक शहर रोहतक की, हम इतिहास सुनाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।
6. सतयुग में मान्धाता जी की, अपनी साख पुरानी थी।
चक्रवर्ती राजा कहलाते, अयोध्या ही राजधानी थी।
सूर्य उदय और अस्त हो जाये, इतनी बड़ी कहानी थी।
यज्ञ में दान दिया राजा ने, ऐसा सब ने मानी थी।
सतयुग-त्रेता-द्वापर-कलयुग, सब इसके गुण गाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

7. महर्षि व्यास ने इस रोहतक को, स्वर्गसमान बताया है।
कहते हैं कि इस रोहतक को, कार्तिकेय ने बसाया है।
दूर-दूर तक इन्द्रप्रस्थ तक, अपना राज्य बनाया है।
पाण्डव नकुल कर्ण जी ने भी, इस पर जोर लगाया है।
अपनी सेनाओं को लेकर, नकुल जी रोहतक आते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।
8. रोहतक शहर से बारह मील पर, सांघी गाँव सुहाना है।
जसिया गाँव से लिंक रोड पर, सीधा आना-जाना है।
सांघी गाँव बहुत ही सुन्दर, दूध-दही-घी खाना है।
यातायात की अनुपम सुविधा, उत्तम गाँव पुराना है।
गाँव शहर की इस दूरी को, वाहन तय कर पाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।
9. सांघी गाँव में बख्तावरसिंह, आनन्दित मन रहते थे।
मानवता के सत्य पथिक थे, मानव-सेवा करते थे।
जो भी उनकी शरण में आता, आओ बैठो कहते थे।
मन निर्मल स्वच्छन्द निराले, सबको प्यारे लगते थे।
मिलनसार व्यवहारकुशल थे, हँसते और हँसाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।
10. आर्यों की पावन भूमि पर, गोरे राज किया करते।
इनके शासक और सिपाही, गाँवों में आया करते।
चौधरी साहब जैलदार थे, जायजा रोज लिया करते।
बैठकर फिर आपस में सब, वार्तालाप किया करते।
एक सिपाही की गलती से, जैलदार घायल हो जाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

11. घटी अचानक थी जब घटना, मातूराम जी आये हैं।
दशा देखकर पूज्य पिता की, मन ही मन घबराये हैं।
अनहोनी तो होकर रहती, जन-जन को समझाये हैं।
पूज्य पिता के पथ पर चलकर, जीवन सफल बनाये हैं।
मानवता ही इस जीवन का, निज उद्देश्य बनाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।
12. मातूराम जी सरल हृदय थे, ईश्वर को नित भजते थे।
जिससे सबको सुख मिल जाये, ऐसा काम भी करते थे।
दीन-दुखी को गले लगाकर, इच्छा पूरी करते थे।
जो भी अड़चन गाँव में आती, उसको पूरा करते थे।
छुआछूत का भेद मिटाकर, ईश्वर के गुण गाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।
13. भारत में पाखण्ड भरा था, करते थे सब मनमानी।
ऊँच-नीच का भेदभाव था, करते रहते निगरानी।
गाँव के श्रेष्ठ पुरुष जो होते, कुएँ पर भरते पानी।
निर्धन को धनवान सताते, करते रहते नादानी।
दशा देखकर मातूराम जी, उनको गले लगाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।
14. आजादी से पहले यहाँ पर, अंग्रेजों का छाया था।
भोले-भाले इन लोगों को, गोरों ने हड़काया था।
वेदों की उत्तम शिक्षा थी, उनको भी ठुकराया था।
ग्रन्थों को भी खंडित करके, फिर उत्पात मचाया था।
इनके शासन से तङ्ग होकर, सारे शोर मचाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

15. ऋषिवर दयानन्द जी ने, दुःखी हृदय को जान लिया।
आर्यसमाज बनाया पहले, फिर स्वदेश का नाम लिया।
अनुयायी बनकर सब आये, लोगों ने पहचान लिया।
अंग्रेजों को वापिस भेजो, ऐसा सब ने ठान लिया।
राष्ट्रधर्म की रक्षा हित सब, आगे कदम बढ़ाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।
16. चोटी और जनेऊ दोनों, ब्राह्मण धर्म का गहना है।
शूद्रों को दोनों वर्जित है, ऐसा उनका कहना है।
ऋषिवर दयानन्द जी बोले, द्वन्द्व नहीं अब सहना है।
आर्य धर्म को अपनाओ तुम, सुखपूर्वक यदि रहना है।
ऋषिवर के आशीष को पाकर, आन्दोलन अपनाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।
17. भगत सिंह के चाचा जी भी, रोहतक आया करते थे।
अंग्रेजों की मनमानी को, भारतवासी सहते थे।
रामजीलाल और मातूराम जी, आगे आओ कहते थे।
वापिस भेजो अंग्रेजों को, अक्सर कहते रहते थे।
मातूराम जी मानवता के, सत्य पथिक कहलाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।
18. मातूराम जी परम दयालु, पर उपकार किया करते।
दीन दुःखी जो शरण में आता, उनसे प्यार किया करते।
जो भी करते थे जीवन में, वेद अनुसार किया करते।
ऋषिवर के आदेश को पाकर, सद्व्यवहार किया करते।
मातृ-भूमि की रक्षा-हित में, लोगों को समझाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

19. आर्य धर्म के प्रबल समर्थक, मातूराम निराले थे।
लाजपतराय, अजीत सिंह जी, देशभक्त रखवाले थे।
पूर्ण स्वच्छ जीवन था उनका, अपने को रंग डाले थे।
मामकौर की कोख से जन्मे, रणबीरसिंह मतवाले थे।
धन्य ऐ माता मामकौर जी!, हम तेरे गुण गाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

20. रणबीरसिंह का जन्म हुआ जब, घर में दिवालीसी छाई।
माता निर्माता बन करके, सब के मन को हरषाई।
पहली शिक्षा पूज्य पिता ने, इसी गाँव में करवाई।
जैसे सूरज ऊपर चढ़ता, बालक ने ले ली अँगड़ाई।
प्रारम्भिक शिक्षा गाँव में पाकर, आगे पढ़ने जाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

21. राष्ट्रीय एंग्लो विद्यालय में, अगर प्रवेश लिया जाए।
अच्छी शिक्षा पाकर जग में, बालक उत्तम बन जाए।
मातूराम के परम हितैषी, भगत फूलसिंह जी आए।
बालक को गुरुकुल में भेजो, घरवालों को समझाए।
भैंसवाल गुरुकुल में जाकर, आर्षविधि अपनाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

22. गुरुकुल की मर्यादा ऐसी, वैदिक धर्म का नारा है।
दिनचर्या और यौगिक विद्या, यह सौभाग्य हमारा है।
प्रातः सन्ध्या-हवन करें सब, वेद-मन्त्र भी प्यारा है।
भगत फूलसिंह आकर बोले, बालक सबसे न्यारा है।
दर्द हुआ जब दांत में इनके, गुरुकुल से घर आते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

23. परम विवेकी मातूराम जी, बालक रोहतक ले आए।
वैश्य हाई स्कूल में लाकर, इनको दाखिल करवाए।
देश-भक्त बनेगा बालक, अपने मन को समझाए।
कर्म करे कुछ जग में ऐसा, आगे को बढ़ता जाए।
एफ.एस.सी. की शिक्षा लेकर, वापस घर आजाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

24. जिला जीन्द के डूमरखाँ में, हरद्वारी सिंह जी रहते थे।
सदाचार के प्रतिमूर्ति थे, ईश्वर सुमिरन करते थे।
माता-पिता जो कह देते थे, बालक उसको करते थे।
रिश्ता जोड़ दिया बालक का, घर के लोग भी कहतेथे।
पढ़ने की उत्कट इच्छा थी, दिल्ली पढ़ने जाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

25. छोड़ दिया विज्ञानविषय को, संस्कृत में ही ध्यान दिया।
अर्थशास्त्र को रट डाला था, गुरुओं का सम्मान किया।
स्नातक बन करके निकले, मारग भी पहचान लिया।
जीवन में आगे बढ़ना है, ऐसा मन में ठान लिया।
हरदेई के साथ में रहकर, जीवन सफल बनाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

26. कर्मठ जो होता है मानव, आगे बढ़ता जाता है।
अपनी रक्षा खुद करता है, सबको सुख पहुँचाता है।
मातृभूमि की रक्षा करके, जग में छवि बिखराता है।
मानवता ही इस जीवन का, उत्तम पथ कहलाता है।
गाँधी जी के आन्दोलन में, मिलकर बिगुल बजाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

27. चौधरी साहब एक दिन बोले, मातृभूमि पर बलि जाऊँ।
कांग्रेसी नेता से मिलकर, अपना उद्देश्य बता पाऊँ।
श्रीराम शर्मा जो कहते, सादर उसको अपनाऊँ।
जीवन के अनमोल सफर में, आगे को बढ़ता जाऊँ।
पूज्य पिता श्री मातूराम को, अपनी बात बताते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

28. पूज्य पिता से आकर बोले, आन्दोलन में जाऊँगा।
जो भी संकट है भारत पर, मिलकर हाथ बटाऊँगा।
गाँधी जी के पदचिह्नों पर, चलकर साथ निभाऊँगा।
मातृभूमि की रक्षा करके, जीवन धन्य बनाऊँगा।
पण्डित जी की आज्ञा पाकर, आन्दोलन अपनाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

29. पण्डित जी ने इस बालक को, सारी बात बता डाली।
पंजाब प्रान्त में दो पार्टी हैं, सत्यपाल जी हैं पाली।
गोपीचन्द भार्गव के दल में, कोई जगह नहीं खाली।
सत्यपाल जी मेरे अनुचर, करते रहते रखवाली।
आशीर्वाद पण्डित का पाकर, सत्याग्रह अपनाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

30. गाँधी जी का नियम यही था, जो भी आगे आएगा।
उपायुक्त को खबर भेजकर, सत्याग्रह अपनाएगा।
जो भी जहाँ प्रदर्शन करता, अपना फर्ज निभाएगा।
गोहाना-झज्जर का रोहतक, न्यायालय कहलाएगा।
सत्याग्रही जो आगे आते, गिरफ्तार हो जाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

31. रणबीर सिंह जी सत्याग्रह में, आगे आओ कहते थे।
उपायुक्त को खबर भेजकर, सांघी गाँव में रहते थे।
भ्रष्टाचारी अंग्रेजों की, सारी मुसीबत सहते थे।
गिरफ्तार कर लाओ इनको, जेल भरो ये कहते थे।
रोहतक जेल से फिर इनको, फिरोजपुर ले जाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

32. देशभक्ति की प्रबल भावना, अपने मन में पाले थे।
प्रोफेसर श्री निगम वहां पर, इक साथी मतवाले थे।
गोपीचन्द के अनुयायी थे, गाँधी के रखवाले थे।
दोनों गुटों के मतभेदों से, अपनी डोर सम्भाले थे।
गाँधी जी के आदेशों का, पालन कर दिखलाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

33. अंग्रेजों की कूटनीति यह, सब को यूँ ही भरमाता।
भीमसेन सच्चर जी बोले, अन्याय नहीं मुझको भाता।
कहने से हत्या नहीं होती, करने से ही हो जाता।
भारत की रक्षा करनी है, यही हमारी है माता।
छोड़ दिया सत्याग्रहियों को, सारे वापस आते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

34. गाँधी के आदेश को पाकर, फिर सब आगे आए हैं।
एक-एक करके सब साथी, सत्याग्रह अपनाए हैं।
बन्द किया फिर जेल में इनको, जैसे जो भी थ्याए हैं।
भारत माता की रक्षा में, तन-मन सभी लुटाए हैं।
एक वर्ष की सजा काटकर, सांघी गाँव में आते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

35. पूज्य पिता श्री मातूराम का, अन्तिम समय निकट आया।
परमपिता का नियम यही है, जो भी इस जग में आया।
अनुभव हुआ हृदय में इनके, बरगद की ठंडी छाया।
भारतमाँ को किया समर्पित, तन-मन-धन निर्मल काया।
घरवालों को सौंप दिया सब, खुलकर आगे आते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

36. पूज्य पिता जब छोड़ चले तब, मन में चिन्ता थी भारी।
महासमिति की मीटिंग बुलाकर, आंदोलन करदी जारी।
अध्यक्ष बनाया था गाँधी को, रहते बनकर अधिकारी।
जगह-जगह पर जलसे करके, करते रहते तैयारी।
आजादी हासिल करनी है, यह संकल्प उठाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

37. गोरे सह न सके आन्दोलन, वापस फिर से वार किया।
कड़ी सुरक्षा कर दी सारी, सेना को तैय्यार किया।
मौलाना नेहरू पटेल को, बम्बई में गिरफ्तार किया।
हिंसा भड़की चहुँदिशा में, मरना भी स्वीकार किया।
कठिन समस्या देख-देखकर, साथी सब घबराते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

38. चौधरी साहब बड़े निडर थे, इनसे सब सुख पाते थे।
आसपास की सभी समस्या, मिल करके सुलझाते थे।
पुलिस को चकमा अक्सर देते, उनके हाथ न आते थे।
क्रोधित होकर शासक-जन भी, बच्चों को ले जाते थे।
बच्चों की यह दशा देखकर, खुद आगे आ जाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

39. बहादुरगढ़ में पकड़ के इनको, रोहतक जेल में ले आए।
कारावास की सजा मिली थी, मुलतान शहर में पहुँचाए।
मुलतान जेल में जो भी आये, सबको यही नजर आए।
जत्थेदार बनाया इनको, अफसर के आगे आए।
भातृभूमि की रक्षाहित में, मिलकर कदम बढ़ाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

40. मांडौठी के मांगेराम जी, मुलतान जेल में जब आए।
गाँधी टोपी सिर पर पहनी, देख के शासक घबराए।
उतारो टोपी कहा था इनको, शासकजन फिर समझाए।
टोपी नहीं उतारूँगा मैं, मांगेराम जी फरमाए।
खतरनाक मुजरिम कह करके, रावलपिण्डी लाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

41. पुलिस वालों से दंगा करके, उन को भी भरमाते हैं।
अलग-2 करके इन सबको, मुलतान जेल में लाते हैं।
लाठी चार्ज किया इन पर भी, गहरी चोट बताते हैं।
स्वास्थ्य खराब हुआ इनका, तब शासक घबराते हैं।
लाहौर जेल में इनके साथी, आपस में मिल जाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

42. भीमसेन गोपीचन्द भार्गव, कुलवीर सिंह मस्ताने थे।
गुलाब सिंह रूपचन्द जैसे, कुन्दनलाल दीवाने थे।
मुलतान जेल में वापिस पहुँचे, सत्याग्रही पुराने थे।
इनके साथ अनेक योद्धा, देवीलाल मनमाने थे।
अजब हौसला इनके अन्दर, जेलर से टकराते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

43. अत्याचारी उन अंग्रेजों को, देशभक्ति फिर दिखलाते।
जो भी मनमानी करते थे, उनको भी थे समझाते।
रिश्तेदार जो हावी होते, उनके भी आगे आते।
प्रीतसिंह के रिश्तेदार को, मानवता फिर सिखलाते।
तहसीलदार श्री अमर सिंह को, सारी बात बताते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।
44. मानवता के प्रबल समर्थक, रणबीर सिंह मतवाले थे।
संस्कारपूर्ण जीवन था इनका, पूज्य पिता ने ढाले थे।
गाँधी जी के अनुयायी थे, सत्याग्रही निराले थे।
अम्बाला में पहुँच गए थे, श्रद्धा मन में पाले थे।
हृदय उदार, निर्धन की सेवा, उत्तम गुण अपनाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।
45. सत्य की जीत हमेशा होती, मन में इनके चाव रहा।
कठिन से कठिन संषर्घों में, चलना इनका भाव रहा।
गांव देश और जेलों में भी, इनका बहुत प्रभाव रहा।
दीन-दुखी के साथी बनते, ऐसा मधुर स्वभाव रहा।
सत्य की जीत हमेशा होती, ऐसा वेद बताते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।
46. अंग्रेज वापस चले गये पर, मार-काट का दौर रहा।
इसको मारो उसको छोड़ो, भारत में यह शोर रहा।
माता-बहन और बेटी को, कहीं न कोई ठौर रहा।
हाय-हाय करते रहते थे, यही दशा चहुँओर रहा।
चौधरी साहब आगे आकर, इन सबको समझाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

47. जगह-जगह पर यही दशा थी, मन में चिन्ता घाल रहा।
बहादुरगढ़, भालौट, हसनगढ़, खरखौदा का हाल रहा।
चाँदीगाँव मेवात में देखो, हिंसक दल का जाल रहा।
कितने बेघर होकर भागे, जो भी मालामाल रहा।
विस्थापितों के पुनर्वास में, अपना जोर लगाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।
48. रणबीर सिंह जी के जीवन की, आगे कथा सुनाता हूँ।
संविधान सभा का गठन हुआ, तबकी बात बताता हूँ।
कई दलों के गठबन्धन का, मैं इतिहास सुनाता हूँ।
हिन्दू, मुस्लिम सिख ईसाई, सबका हाल बताता हूँ।
डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद जी को, तब अध्यक्ष बनाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।
49. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और मुस्लिम लीग निराले थे।
अखिल भारतीय दलित वर्ग था, हिन्दू दल मतवाले थे।
लैण्डलार्ड महिला सम्मेलन, अनुसूचित जातिवाले थे।
आंग्ल भारतीय के प्रतिनिधि थे, कुछ गोरे कुछ काले थे।
भारतवासी खुश हो करके, इनका साथ निभाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।
50. भारत जब आजाद हुआ, तब भारतवासी हरषाए।
आपस में गठबंधन करके, अपना मारग सुलझाए।
संविधान सभा के चुनाव में, रणबीर सिंह आगे आए।
कर्मठता के प्रतिमूर्ति थे, सब के मन को ये भाए।
सूझबूझ और साहस रखकर, आगे कदम बढ़ाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

51. भीमराव अम्बेडकर जी ने, संविधान को पेश किया।
सबसे पहले आगे आकर, जन-जन को सन्देश दिया।
आजादी में शामिल होकर, देशहित उपदेश दिया।
आगे आकर कदम बढ़ाओ, सुन्दर भारत देश दिया।
धन्य हैं ऐसे मानव जग में, इस धरती पर आते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

52. मुख्यमंत्री प्रताप सिंह जी, जब अपने पद पर आए।
भगवतदयाल और चाँदराम जी, मन्त्रीपद को अपनाए।
ज्ञानी जैलसिंह जी को भी, मन्त्री पद पर बुलवाए।
रामचरणचन्द मित्तल को भी, कैबिनेट में ले आए।
बिजली और सिंचाई मन्त्री, रणबीर सिंह बन जाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

53. फरीदाबाद का किसान जब, इनके पास चला आया।
अधिग्रहण में भूमि गई थी, मन ही मन वह घबराया।
चौधरी साहब उससे बोले, क्या सोचकर तू आया।
मेरे लायक सेवा बोलो, फिर किसान ने फरमाया।
बिजली की फरमाइश कर दी, हफ्ते में लगवाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

54. चौधरी साहब सरल हृदय थे, लोगों के मन भा जाते।
बिजली और सिंचाई में जो, उलझन आती सुलझाते।
भ्रष्ट अधिकारी गड़बड़ करते, उनको भी ये समझाते।
ईमानदार और वफादार थे, भ्रष्ट लोग घबरा जाते।
भाखड़ा बांध निर्माण कार्य की, जायजा लेने जाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

55. भ्रष्ट अधिकारी जो भी होते, अपना काम चलाते थे।
बिजली चोरी अक्सर होती, सामान भी हटवाते थे।
बाजारों में बेच-बेच कर, अपना काम चलाते थे।
जो भी खरीदे वापिस लाये, घोटाले करवाते थे।
उनको सख्त हिदायत देकर, अपना फर्ज निभाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

56. पट्टी क्षेत्र के एक गाँव में, चौधरी साहब जब जाते।
गाँव के लोग दुःखी रहते थे, सिंचाई कर ही नहीं पाते।
इकट्ठा करके ग्रामीणों को, समस्याएँ सब सुलझाते।
रावी-व्यास का खारा पानी, यह कहकर वे रुक जाते।
चौधरी साहब पट्टी क्षेत्र में, ट्यूबवैल लगवाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

57. प्रताप सिंह कैरों ने इनको, अपने पास बुलाया था।
गोपनीय इक बात बताई, इन के समझ में आया था।
विश्वास नहीं है पाकिस्तान पर, फिर ऐसा फरमाया था।
कसूर नाला खुदवा करके, अपना फर्ज निभाया था।
दिन भर पानी भरते रहते, रात-रात खुदवाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

58. प्रतापसिंह जी निरस्त हुए तब, रामकिशन जी आए थे।
लोक निर्माण विभाग सौंपकर, मन ही मन हर्षाए थे।
चौधरी साहब कर्मठता से, उनका साथ निभाए थे।
जैसी जहाँ जरूरत होती, काम वहाँ करवाए थे।
गाँव-शहर की सभी समस्या, आपस में सुलझाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

59. भारत-पाक का युद्ध हुआ था, कसूर नाला काम आया।
प्रधानमंत्री इन्दिरा जी को, इनकी बात समझ आया।
जम्मू-कश्मीर की सीमा पर, जवानों ने फिर दर्शाया।
चौधरी साहब की दूरदृष्टि का, रहस्य तभी समझ आया।
राज्यसभा में किया पदार्पण, समर्थक साथ निभाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।
60. चुनावों का जब जिक्र चला, चौधरी साहब समझाए।
लड़ा तो मैं अंग्रेजों से था, तुम सब नहीं समझ पाए।
आपस में सब भाई-बन्धु, कौन किसे अब दिखलाए।
राजनीति तो राजनीति है, इनकी बात समझ आए।
राजनीति अनुकूल नहीं है, कह करके रह जाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।
61. उनके निर्णय को सुनकर के, अपने पराये घबराए।
तन-मन-धन से राष्ट्र की सेवा, करता रहूँगा समझाए।
संस्कारपूर्ण जीवन था इनका, कभी न विचलित होपाए।
जनहितकारी कार्यों को भी, करके सबको दिखलाए।
कांग्रेसी बनकर ही रहूँगा, यह सबको समझाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।
62. हाईकमान ने कई बार जब, इन को आगे ले लाए।
हरियाणा-पंजाब प्रान्त के, लोग सभी थे हर्षाए।
कोई लालच नहीं है मन में, लोगों को यह समझाए।
मन को अपने निर्मल रखकर, अपना फर्ज निभा पाए।
देशभक्ति की मर्यादा को, अपने मन में लाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

63. पण्डित नेहरू अपने काल में, इनका आदर करते थे।
चौधरी साहब जो भी कहते, उस को पूरा करते थे।
कठिन काम पूरा करना है, निज कर्तव्य समझते थे।
जो भी इनको करना होता, खुद ही करते रहते थे।
मानवता का पालन करके, जीवन धन्य बनाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।
64. प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी, इन की इज्जत करती थीं।
जहां कहीं भी अड़चन आती, मिलकर पूरा करती थीं।
हरियाणा पंजाब प्रान्त में, आगे-आगे रखती थीं।
श्रेष्ठजनों के निज जीवन को, सबसे उत्तम कहती थीं।
राज्यसभा के उत्तम पद पर, तव आसीन हो जाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।
65. देश धर्म मर मिट जाना, है कायर का काम नहीं।
कर्मठ जो होते हैं जग में, करते हैं आराम नहीं।
बहत्तर में जब बाढ़ थी आई, था दाने का नाम नहीं।
राहत दिलवाई थी सबको, रुकने का था काम नहीं।
हरियाणा की राजधानी का, फिर आवाज़ उठाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।
66. यातायात का प्रश्न उठा जब, सबसे पहले ये आए।
ग्रामीणों को सुविधा देकर, अपने मन में हर्षाए।
दीन-दुखी और लाचारी में, ये जनता के काम आए।
राष्ट्र की उन्नति अपनी उन्नति, यही विचार बना पाए।
ऐसे मानव होते हैं जो, जग में पूजे जाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

67. अपने भाषण में अक्सर ये, जनहित की बातें करते थे।
राष्ट्रहित में जो अनुचित हो, उसे तिरष्कृत करते थे।
गाँधी जी के पदचिह्नों पर, हरदम चलते रहते थे।
जो भी काम मिला था इनको, पूरा करते रहते थे।
चुनावों से अब अलग रहूँगा, यह सिद्धान्त बनाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

68. चौधरी साहब कहते रहते, दल को बदलना ठीक नहीं।
कांग्रेस ही सर्वोत्तम है, इस को बदलना ठीक नहीं।
थोड़े से लालच में आकर, मन को बदलना ठीक नहीं।
ऋषियों की पावन धरती पर, पल को बदलना ठीक नहीं।
राजनीति से विमुख हुए जब, ईश्वर गुण गाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

69. वैसे तो अनमोल कार्य हैं, मैं तो कह नहीं पाता हूँ।
थोड़ा-सा जो अनुभव पाया, उसको मैं बतलाता हूँ।
त्यागपूर्ण जीवन जीने की, उत्तम कला बताता हूँ।
इनके पदचिह्नों पर चलकर, जीवन सफल बनाता हूँ।
ऐसे महापुरुष इस जग में, सब को राह दिखाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

70. सहधर्मिणी हरदेई जी की, ममता कही नहीं जाती।
जो भी अड़चन आती घर में, फौरन उसको सुलझाती।
बच्चों के सुख की खातिर, सारी विपदा सह जाती।
शिक्षा से जीवन बनता है, बच्चों को यह समझाती।
चौधरी साहब हरदेई जी की, सारी बात बताते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

71. जो भी अतिथि आता था घर में, उसकी सेवा करती हैं।
शान्तचित्त और धैर्यवान् हैं, सबके मन को हरती हैं।
संस्कारपूर्ण जीवन है इनका, ख़ुश हो करके रहती हैं।
पाँचों पुत्रों को शिक्षित कर, उत्तम बातें कहती हैं।
धन्य हैं ऐसी माता जग में, सब इनके गुण गाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

72. हरदेई जी कहती रहती, जग में ऊँचा नाम करो।
कोई चिन्ता करो न घर की, हरदम अपना काम करो।
अंग्रेजों की नादानी है, इन का काम तमाम करो।
शहादत दी है जिन वीरों ने, उनको सदा सलाम करो।
सारी चिन्ता छोड़के घर की, सत्य पथिक बन जाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

73. प्रथम पुत्र प्रताप सिंह जी, निर्मल और निराले थे।
पूज्यपिता के पदचिह्नों पर, निज जीवन को ढाले थे।
सहधर्मिणी प्रेम के संग में, जीवन को रंग डाले थे।
सबको साथ में लेकर चलते, सत्यपथिक मतवाले थे।
देश की रक्षा करते रहना, निज उद्देश्य बनाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

74. द्वितीय पुत्र श्री इन्द्रसिंह जी, भक्ति-भावना रखते हैं।
वैदिक धर्म के अनुयायी हैं, ईश्वर को नित भजते हैं।
सहधर्मिणी राजवन्ती संग, सुख-पूर्वक सब रहते हैं।
जो भी इनके शरण में आता, आओ-आओ कहते हैं।
ऋषिवर के आदेश पे चलकर, वैदिक ध्वज लहराते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

75. जोगेन्द्र सिंह बड़े मधुर थे, जीवन में रस भरते थे।
जैसी जहाँ जरूरत देखी, वैसा काम भी करते थे।
सहधर्मिणी सरोज के संग में, खुश हो करके रहते थे।
मन निर्मल स्वच्छन्द निराले, सबको प्यारे लगते थे।
चौथे पुत्र भूपेन्द्र सिंह की, आगे कथा सुनाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

76. आज जरूरत थी जनता को, कोई नेता आ जाए।
उसकी कथनी और करनी में, कोई अन्तर ना आए।
जनता की रक्षा करना है, यह उद्देश्य बना पाए।
सबके हित में अपना हित है, सब के मन में बस जाए।
इनकी बातें भूपेन्दर जी, सुनकर आगे आते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

77. भ्रष्टाचार की इस सीमा को, कोई नहीं संभाल सका।
आतंकित होकर रहते हैं, भय को भी ना टाल सका।
इधर-उधर की बातें करते, मानवता ना पाल सका।
आर्यों की इस मर्यादा को, जीवन में ना ढाल सका।
भूपेन्दर जी हरयाणे में, फिर खुशहाली लाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

78. चौधरी भूपेन्दर सिंह जी, जब सत्ता में आए हैं।
जैसी जहाँ जरूरत समझी, वैसी वहाँ बनाए हैं।
मानवता की रक्षा करके, मानव-मन हरषाए हैं।
गाँव-शहर की सभी समस्या, मिल करके सुलझाए हैं।
प्रगतिशील इस हरियाणा के, वे रक्षक कहलाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

79. श्रीमती आशा जी हुड्डा, इनका साथ निभाती हैं।
जहाँ-जहाँ जरूरत होती, इनके साथ भी जाती हैं।
महिलाओं को जागृत करतीं, नई चेतना लाती हैं।
मानवता ही निज जीवन का, इक उद्देश्य बताती हैं।
माता ही निर्माता होती, ऐसा वेद बताते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

80. नाम मधुर है धर्मेन्दर का, सबको प्यारे लगते हैं।
प्रतिभाशाली स्वच्छ छवि है, राजदुलारे लगते हैं।
राज-भवन की पावन गरिमा, चाँद-सितारे लगते हैं।
जाते हैं जिस तरफ भी देखो, वैदिक नारे लगते हैं।
सहधर्मिणी गीता के संग में, जीवन सफल बनाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

81. दीपेन्दर को आशा जी ने, देशभक्ति का ज्ञान दिया।
देश के ऊपर जीना-मरना, उत्तम मार्ग महान् दिया।
युवा वर्ग के जननेता को, एक नई पहचान दिया।
जनता की सेवा करना है, माता ने वरदान दिया।
मिली बिरासत में जो शिक्षा, दीपेन्दर अपनाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

82. दादा जी के पदचिह्नों पर, दीपेन्दर का क्या कहना।
सबको गले लगाकर चलना, इनका है सुन्दर गहना।
माता-पिता के आदेशों का, पालन हरदम ही करना।
हृदय उदार बड़े ही निर्मल, मर्यादा में ही रहना।
युवा-वर्ग के हृदय कमल हैं, सब के मन को भाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

83. युवा वर्ग को जागरूक कर, आगे कदम बढ़ाना है।
भारत माता के चरणों में, मस्तक सदा झुकाना है।
भटक रहे हैं जो भी प्राणी, उनको राह दिखाना है।
ऋषि-मुनि जो कहते आए, उसको कर दिखलाना है।
दीपेन्दर जी आगे आकर, जन-जन के हो जाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।
84. चौधरी साहब देशभक्त थे, जन-जन के हितकारी थे।
आजादी के कर्मठ योद्धा, सुखी सदा नर-नारी थे।
दुखियों को वे गले लगाते, अंग्रेजों पर भारी थे।
संघर्षपूर्ण जीवन जीने की, सच्चे स्वच्छ पुजारी थे।
जीवन के अंतिम घड़ियों की, अब हम झलक दिखाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।
85. हरयाणा इक प्रान्त मनोहर, सारे जहाँ से प्यारा है।
भारत की मर्यादा देखो, सब देशों से न्यारा है।
ऋषियों की पावन धरती है, यह सौभाग्य हमारा है।
दुस्साहस करता यदि कोई, वीरों ने ललकारा है।
शुभ-संदेश दिया बच्चों को, बच्चे खुश हो जाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।
86. परमपिता की सृष्टि क्रम में, सब आते और जाते हैं।
मानव जीवन पाकर जग में, उत्तम कर्म कमाते हैं।
धन-दौलत और कुटुम्ब कबीला, सारे यहीं रह जाते हैं।
हानि-लाभ और यश-अपयश है, यह इतिहास बताते हैं।
शुभकर्मों की निर्मल ज्योति, केवल साथ निभाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

87. दो हजार नौ एक फरवरी, मानव चोला छोड़ दिया।
जन-जन से जो रिश्ता जोड़ा, उस रिश्ते को तोड़ दिया।
भवसागर के भवबन्धन से, अपना मुखड़ा मोड़ लिया।
जिस पिंजरे में बसा था पक्षी, उस पिंजरे को तोड़ दिया।
इनसे प्रेरणा पाकर हम सब, जीवन **'सरस'** बनाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

88. पूरा भारत स्तम्भित था, समाचार जब यह आया।
टी.वी. और समाचारों में, जन-जन के मन में छाया।
कैसे रोक सके कोई आँसू, कुछ भी समझ में ना आया।
जाएगा वह जगत् से वापस, जो भी जगत् में है आया।
धन्य हैं ऐसे मानव जग में, युग-युग पूजे जाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

हरियाणा की पुण्यभूमि को, सादर शीश झुकाते हैं।
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की, पावन कथा सुनाते हैं॥
आर्यपुत्र रणबीर सिंह की......।

ओ३म् शम्।

चौ० रणबीरसिंह भारत के पूर्व प्रधानमन्त्री
श्री पं० जवाहरलाल नेहरू के साथ ।

चौ० रणबीरसिंह भारत की पूर्व प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के साथ
साथ में अब्दुल गफ्फार खां ।